© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 3 | Print ISSN : 2395-6011 | Online ISSN : 2395-602X
Themed Section: Education

वेदों में कृष्ण

प्रवीण कुमार
शोधच्छात्र,
संस्कृत विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

कृष्ण का नाम सुनते ही हमारे शरीर में तरङ्गे उठने लग जाती हैं। उनका नटखट स्वरूप हमारे सामने चित्रित होने लगता है कि ये वही श्याम–सलोना है जिसने अपने बालरूप से सभी का मन मोह लिया था, जिसने संसार को कर्मयोग की शिक्षा दी, जिसने महाभारत युद्ध में सत्य का साथ दिया है और जिसने गीता का उपदेश दिया है। वही हमारा आराध्य है, वही एक ऐसा आकाशदीप है जो हर मनुष्य का पथ प्रदर्शित करता है। वह हमारा समकालिक सखा भी है जो हमारे साथ खेलता है, हमसे बातें करता है, लड़ता है और फिर प्यार से हमें अपने आप में समाहित कर लेता है। ऐसे कृष्ण की जो छटा लौकिक साहित्य में दिखाई पड़ती है उसी 'कृष्ण' को हम वेदों उपनिषदों एवं पुराणों के आधार पर प्रकाश डालने का प्रयास कर रहे हैं।

वैदिक साहित्य में कृष्ण :–

दार्शनिकता की दृष्टि से देखा जाये तो वैदिक विचारधारा को देवतावाद कहा जा सकता हैं अंग्रेज विद्वानों ने उसका नामकरण बहुदेवतावाद किया है किन्तु यह शब्द उस युग की विचारधारा को स्पष्ट करने में समर्थ नहीं है। इसलिये बहुदेववाद शब्द भी वैदिक दर्शन को स्पष्ट करने में असमर्थ सिद्ध हो चुका है। यथार्थ में तो वैदिककालीन आर्ष ऋषि अलग–अलग देवों को 'एक' ही देव की विभिन्न अभिव्यक्ति तथा उसके भिन्न – भिन्न रूप व नाम समझते थे। उस 'एक' असीम सत्य, ऋत् चेतना की व्यंजना पुरुष सूक्त में हुई है –

''सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशांगुलम्।।'' पुरुष सूक्त 10.90.1

किन्तु उस एक सत्य की लौकिक साहित्य में अनेक रूपों में उल्लेख हुआ।

हमारे भारतीय साहित्य में वेदों की संख्या चार मानी गई है– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्वेद। इनमें सबसे प्राचीन वेद ऋग्वेद माना जाता है। यदि वैदिक ऋचाओं में कृष्ण का अन्वेषण करते हैं तो ऋग्वेद के अष्टम और दशम मण्डल के कुछ सूक्तों के रचयिता ऋषि कृष्ण को पाते हैं

अयं वां कृष्णो अश्विना हवते वाजिनीवस्।
मध्वः सोमस्य पीतये श्रृणुतं जरितुर्हवं कृष्णस्य स्तुवतो नरा।
मध्वः सोमस्य पीतये। ऋग्वेद 8।85।3–4

और इसी वेद के प्रथम मण्डल में भी कृष्ण का उल्लेख मिलता है।

कृष्ण का नाम ऋग्वेद के प्रथम, अष्टम और दशम इन तीन मण्डलों में भिन्न – भिन्न सन्दर्भों में कृष्ण का नाम मिलता है। ऋग्वेद के अष्टम मण्डल के 85वें सूक्त के स्तोता कृष्ण आंगिरस ऋषि हैं। जिसमें कृष्ण आंगिरस अश्विनी कुमारों को यज्ञ में सोमपान के लिये आमन्त्रित करते हुये उनके ऐश्वर्य की कामना करते हुये नजर आते हैं। इसकी तीसरी ऋचा में भी कृष्ण का उल्लेख मिलता है –

अयं वां कृष्णो अश्विना हवते । ऋग्वेद 8/85/3

ऋग्वेद के दशम मण्डल के 42वें सूक्त के तृतीय अध्याय में कृष्ण आंगिरस तीन ऋचाओं में अश्विनी कुमारों की स्तुति करते हैं तथा इसी मण्डल के 44वें सूक्त के चतुर्थ अध्याय के 11 ऋचाओं में वे बल, धन व गुण प्राप्ति इत्यादि की कामना करते हुये इन्द्र की स्तुति कर रहे हैं। वे इन्द्र से इसप्रकार प्रार्थना करते हैं–

आ यात्व् इन्द्रः स्वपतिर् मदाय। ऋग्वेद 10/44/1

इसके अतिरिक्त भी वैदिक वाङ्मय में दृष्टिपात करें तो कृष्णकथा के अनेक पात्रों का उल्लेख मिलता है।

शकटभंजन, ऊखलधारण, पूतनोद्धरण, यमलार्जुन, गोवर्धनधारण इत्यादि लीलाएं वेदमन्त्रों में प्राप्त होती हैं।

शकट भंजन – **पृथु रथो दक्षिणाया अयोज्यैनं देवासो अमृतासां अस्थुः।**
कृष्णादुदस्थादयां विहायाश्चिकित्सन्ती मानुषाय क्षयाय।। ऋग्वेद 1/123/1

पूतनावध –

हतिः पक्षिणी न दभ्रात्थरमानाष्ट्यां पदं कृणुते अग्निधाने
शं नो गोभ्यश्च पुरुषेभ्यश्चास्तु मा नो हिंसादिः देवा कपांतः।। ऋग्वेद 10/165/3

यमलार्जुन –

यत्र मन्था विवघ्नते रश्मीन्यमितवाघ्व उलूखलसुतानामवेद्विन्द्र जल्गुलः।
ता नो अथ वनस्पती ऋष्वावृष्णेभिः सोतृभिः।। ऋग्वेद 1/28/4
इन्द्राय मधुमत्सुतम्। ऋग्वेद 1/28/8

राधा, गो, व्रज, अहि, वृषभानु, रोहिणी, कृष्ण, अर्जुन आदि पात्रों की सूचना भी आस्थानिष्ठ मनीषियों को प्राप्त होती है।

वैदिक ऋषि प्रतीकात्मक अर्थ लेने के अधिक पक्षपाती रहे हैं। पाश्चात्य विद्वानों ने भी वेदों का अर्थ प्रतीकात्मक ही बताया है। भारतीय प्रज्ञावानों की तरह वह साहित्यिक अर्थ लेने के पक्षपाती नहीं रहे। अजन्मा, शाश्वत ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन करना प्राकृत मानव के लिये असम्भव है। वह अपने मानस पटल में अंकित मूर्ति का चित्रांकन इस नश्वर शरीर में अवतरित होकर नहीं कर सकता । अतः वैदिक ऋषि यज्ञ, हवन आदि के द्वारा देवताओं का आह्वाहन करते थे और प्रतीकात्मक शैली में भगवान् के अलौकिक स्वरूप का वर्णन करते थे।

राधा, गो, व्रज, अहि, वृषभानु, रोहिणी, कृष्ण, अर्जुन आदि शब्द विशिष्ट दैवी गुणों से सम्बन्धित व्यक्तित्त्व को व्यक्त नहीं करते वरन् अन्य अर्थों के भी प्रतिपादक हैं। जैसे–

1 स्तोत्रं राधानां पते – ऋग्वेद 1/30/5
2 गवामप व्रजं वृधि – ऋग्वेद 1/10/7

3 दासपत्नीरहितगोपा अतिष्ठन्निरुद्धा – ऋग्वेद 1/32/11

4 त्वं नृचक्षा वृषभानुपूर्वी कृष्णास्वाग्ने अरुषो विभाहि – अथर्ववेद 3/15/3

5 त्वमेतदधारयः कृष्णासु रोहिणीषु च – ऋग्वेद 8/93/13

6 कृष्णा रूपाण्यर्जुना वि वो मदे – ऋग्वेद 10/21/3

राधा शब्द धन, अन्न और नक्षत्र का बोधक है। गौ का अर्थ है 'किरण'। कहीं कहीं कृष्ण शब्द रात्रि का एवं अर्जुन शब्द दिन का बोधक प्रतीत होता दिखाई पड़ता है तो कहीं कृष्ण बलराम अर्थ को व्यक्त करता है। यह कृष्ण उस अर्थ में नहीं है जिस अर्थों में पुराणों में मिलता है। **'श्री राधा का कमिक विकास – डॉ0 शशिभूषणदास गुप्त – पृष्ठ 101–102'**

'डॉ0 शशिभूषण गुप्त के अनुसार' – कृष्ण राधा, गोप, अर्जुन आदि नामों का सम्बन्ध कष्णकालीन से नहीं अपितु ज्योतिष सम्बन्धी नक्षत्रों आदि से है।

वेदों में पृथिवी को 'कृष्णा' एवं 'सूर्यमण्डल' को कृष्ण कहा गया है। 'शतपथ ब्राह्मण' में चन्द्रमा को भी 'कृष्ण' कहा गया है । वैदिक सिद्धान्त चन्द्रमा, सूर्य, पृथिवी तीनों को ही निरुक्त कृष्ण मानता है–

चन्द्रमा वै ब्रह्मा कृष्णः । शतपथ ब्राह्मण 13/2/1/7

सूर्यप्रकाश की प्रतिमा राधा है। 'राध' धातु का अर्थ है 'सिद्धि'। सूर्यप्रकाश में भी व्यावहारिक सब कार्य सिद्ध होते हैं अतएव कृष्ण श्याम तेज एवं राधा को गौर तेज के रूप में माना जाता है।
इसप्रकार आरम्भ की गई वैदिक व्याख्या का प्रचलित अर्थ शब्दों के सतत् प्रयोग द्वारा कालान्तर में अर्थ परिवर्तन के कारण राधा कृष्ण से अभिन्न कर दिया गया। वेदों में निहित इन शब्दों का मूल अर्थ ऐतिहासिक प्रसिद्धि प्राप्त कृष्ण को व्यक्त करना नहीं था, फिर भी हमारी धार्मिक भावनाएं वेदों में ही खोज करती रहीं। इस बात को धार्मिक उपास्य के रूप में पूर्व प्रचलित सभी ईश्वर रूपों का अन्तर्भाव श्रीकृष्ण में हो गया। वेदों के प्रधान देवता विष्णु के गुणों से भी मेल खाने लगी –

''देवदेवोह्यनन्तात्मा विष्णुः सुरगुरुः प्रभुः ।
प्रधान पुरुषोऽव्यक्तो विश्वात्मा विश्वमूर्तिमान।।
स एवं भगवान् विष्णुः कृष्णेति परिकीत्यते।
अनाद्यन्तमजं देवं प्रभुं लोकनमस्कृतम्।।'' महाभारत वनपर्व 272, 36–72

वेदों में विष्णु का सम्बन्ध गायों से विशेष रूप से दिखायी पड़ता है। काण्वमेघातिथि की आध्यात्मिक अनुभूति है कि विष्णु अजेय गोप हैं जिनकी पराजय कथमपि नहीं हो सकती। इस बात को ''ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के बाइसवें सूक्त अट्ठारहवें मन्त्र'' में कहा गयी है।

'डॉ0 कीथ' ने कृष्ण का विष्णु के साथ ऐकीकरण मानते हैं। अमरसिंह के नामलिंगानुशासन' में विष्णु को विभिन्न नामों से जाना जाता है–

विष्णुनारायणः कृष्णो वैकुण्ठो विष्टरश्रवाः।
दामोदरो हृशीकेशः केशवो माधवः स्वंभूः।। 18
दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो गोविन्दो गरुडध्वजः ।
पीताम्बरोच्युतः शार्ंगी विश्वक्सेनो जनार्दनः।। 19

.....

वसुदेवोऽस्वः जनकः स एवानकदुन्दुभिः।। 22 नामलिंगानुशासनम् अमरसिंह।

ऋग्वेद में विष्णु एक महत्त्वपूर्ण देवता के रूप में प्रारम्भ में नहीं परिगणित हुये, परन्तु यजुर्वेद में यज्ञ की महत्ता के साथ विष्णु के महत्त्व का प्रतिपादन हुआ। विष्णु तीन डग में ब्रह्माण्ड का संक्रमण करने के कारण ऋग्वेद में आदित्यमात्र तो समझे जाते हैं एवं परमानन्द पर पहुंचते पहुंचते अन्य देवताओं से प्रतिष्ठासूचक शब्द भी ग्रहीत करते हैं, जिनमें चक्रपाणि, कृष्ण जैसे शब्द वैदिक देवता सवितृ वाले वर्णनों से किसी न किसी प्रकार लिये गये हैं–

आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो कृष्णेन रजसा चामृणाति।
सविता कृष्णारजांसि दधानः।। ऋग्वेद 1/35/2

बौधायन धर्मसूत्र में विष्णु, नारायण, माधव अन्य सब देवताओं सहित एक ही सन्दर्भ में प्रयुक्त हैं।

ओऽम् केशवं तर्पयामि। नारायणं तर्पयामि। माधवं तर्पयामि। गोविन्दं तर्पयामि। विष्णुं तर्पयामि। मधुसूदनं तर्पयामि। त्रिविक्रमं तर्पयामि। ————————————————। बौधायन धर्मसूत्र द्वितीय 5/9/10

वेदों के अतिरिक्त आरण्यक, उपनिषद् एवं ब्राह्मणग्रन्थों में भी कृष्ण का उल्लेख मिलता है। उपनिषदों में जिस ईश्वर की स्थापना हुई उसे किसी नाम विशेष से न पुकारकर केवल 'तत्' कहा गया। वही निर्गुण व अगोचर हुआ। ईशावास्योपनिषद् के प्रथम श्लोक में उस अगोचर का वर्णन हुआ है–

''ईशावास्यमिदं सर्वम्''

इसीप्रकार 'छान्दोग्योपनिषद्' में अंगिरा के पुत्र घोर ऋषि ने अपने शिष्य देवकी पुत्र कृष्ण को 'यज्ञशास्त्र' सुनाया था। जिसको सुनकर वह कृष्ण अन्य विद्याओं के विषय में तृष्णा से रहित हो गया। उन घोर ऋषि ने देवकी पुत्र कृष्ण से कहा कि अपनी मृत्यु के समय इन मन्त्रों का जप करना –

अक्षितम् असि – तू नाश रहित है।
अच्युतम् असि – तू अविनाशी है।
प्राणसंशितम् असि – तू अति सूक्ष्म प्राण है।

यही तीनों मन्त्र श्रीमद् भगवद्गीता में लिखित आत्मा को जानने वाले हुये। इसीलिये गीता में कृष्ण ने स्वयं कहा कि **''वेदों में मैं सामवेद हूँ।''**

इसीप्रकार 'तैत्तिरीय आरण्यक' के दसवें प्रपाठक के अनुसार नारायण ही वासुदेव हैं। इसी आराण्यक में कूर्मावतार और श्रीकृष्ण का वर्णन हुआ है।

''नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्मे विष्णुः प्रचोदयात्।'' तै0आ010वां प्रपाठक

'भण्डारकर के अनुसार' – कृष्ण के ऋषि होने की परम्परा ऋग्वेद के समय से लेकर छान्दोग्योपनिषद् तक आयी जबकि काण्र्णायन गोत्र था, जिसके मूल पुरुष 'कृष्ण' थे।

वह श्रीकृष्ण जो सोलह कलाओं के स्वामी हैं। उनके जीवन में अनन्त पहलू सहस्रदल कमल के समान हैं। जीवन में हर प्रकार के सम्बन्धों से व प्रत्येक परिस्थिति से वे भी गुजरे हैं एवं परिस्थितियों से उबरने का प्रयास भी किया और विजय भी प्राप्त की। इसीलिये आज वह महापुरुष, युगपुरुष, महानायक के रूप में विश्वविख्यात हैं।

दूसरी ओर कृष्ण का स्वरूप वेदान्त की ही भांति अत्यन्त गूढ़ हैं। इनको जानने के लिये विविध जनश्रुतियों, दार्शनिकों व धार्मिक सम्प्रदाओं, पौराणिक शास्त्रों एवं कल्पनाओं का विशिष्ट योगदान रहा

है। कई दार्शनिक एवं धार्मिक सम्प्रदाओं ने इन्हें 'ब्रह्म' व भगवान' कहा है तो कई कवियों ने इन्हें 'रसनायक' भी कह दिया है तो कई विद्वानों ने इन्हें एक साधारण व श्रेष्ठ मानव बताया। लगभग दो हजार वर्षों से भी अधिक समय से कृष्ण के विराट स्वरूप एवं व्यक्तित्त्व ने भारत में ही नहीं वरन् विभिन्न देशों के आध्यात्मिक एवं भौतिक दोनों क्षेत्रों को एक समान रूप से परिष्कृत कर रखा है। इसमें इतिहास, धर्म व कल्पना का ऐसा सम्मिश्रण हुआ है कि इसमें से ऐतिहासिक कृष्ण को खोज पाना असम्भव नही ंतो कठिन अवश्य होगा।

देवकीपुत्र मातृसत्तात्मक समाज को द्योतित करता है जो वैदिक काल से पूर्व का सिद्ध होता है, जो कृष्ण को वैदिक काल से पहले का सिद्ध करता है। परन्तु पौराणिक कृष्ण की माता के नाम की समानता होने के कारण एवं छान्दोग्योपनिषद् में प्रतिपादित मत का भगवद्गीता में प्रतिपादित सिद्धान्तों को देखकर गार्वे, मजूमदार, ग्रियर्सन, रायचौधरी आदि विद्वानों की धारणा है कि दोनों ही एक व्यक्ति है। **'हिन्दू गाड्स एण्ड सीरीज' – लन्दन 1922 पृ0 82–83**

'हरिभाऊ उपाध्याय' ने अपने ग्रन्थ 'भागवत धर्म' में यह कहा है कि वैदिक आर्यों में जो सुसंस्कृत होकर खेती करते थे उन्हें ही आमतौर पर कृष्ण कहते थे। उनमें सूक्तकार व सूत्रकार भी थे और योद्धा व गोपालक भी। उन्होंने यह भी कहा कि ऋग्वेद 2/25 सूक्त का ऋषि आंगिरस कृष्ण हैं। आरम्भ में कृष्ण एक गोत्र का नाम था एक गण समाज का नाम था। देवकी पुत्र कृष्ण सभी जातियों का प्रतिनिधि था। 'शंकराचार्य' ने भी माना है कि कृष्ण विष्णु के अवतार हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि कृष्ण और कृष्णभक्ति का सम्बन्ध विष्णु या विष्णुभक्ति से है। इसप्रकार वैदिक साहित्य के कृष्ण व वासुदेव कृष्ण में कहीं – कहीं समानता है तो कहीं – कहीं ये पूर्णतया भिन्न भी प्रतीत होते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

(1) ऋग्वेद
(2) सामवेद
(3) छान्दोग्योपनिषद्
(4) शतपथ ब्राह्मण
(5) तैत्तिरीय आरण्यक
(6) बौधायन धर्मसूत्र
(7) हिन्दू गाड्स एण्ड सीरीज – लन्दन 1922 पृ0 82–83
(8) नामलिंगानुशासनम् शब्दकोश